शोध परिधि ISSN-2349-9575
साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

नारी समाज और सुरक्षा : एक चिन्तन

डॉ. जीत सिंह
सहायक प्रो. हिन्दी
कु.मायावती राजकीय महिला
महाविद्यालय, बादलपुर (गौ.बु.नगर)

शोध सारांश

पुरुषों की तरह स्त्रियों की अपनी ऐसी कोई निजी जिन्दगी नहीं होती, जहाँ अपनी मनोवृत्तियों के साथ वे समय और सम्बन्ध को धता बताकर मनो विहार कर सकें। फिल्म जगत के महानायक 'अमिताभ बच्चन जी' कहते हैं कि मनुष्य की आमदनी और स्त्री की उम्र कभी नहीं पूछनी चाहिए। इसका अर्थ है कि मनुष्य अपने लिए ही नहीं कमाता उसमें सभी का (परिवार) हिस्सा होता है। महिला कभी अपने लिए जीवित नहीं रहती वह परिवार के लिए जीवित रहती ह।

नारी समाज की सृष्टा है बिना नारी के समाज की रचना कल्पना मात्र ही है। समाज की धुरी नारी ही है चाहे उसके रूप, बच्ची से लेकर दादी, नानी आदि तक क्यों न हो?

स्त्री को लेकर भारतीय साहित्य, दर्शन एवं धर्मशास्त्रों में चिन्तन की सुदीर्घ परम्परा रही है जहाँ स्त्री की सम्पूर्ण सत्ता को भोग्या, अबला, ललना, कामिनी, रमणी आदि विशेषणों के साथ हेय एवं पुरुष-सापेक्ष रूप में चित्रित किया गया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि प्राचीन एवं मध्ययुगीन सभी रचयिता एवं टीकाकार पुरूष थे। दूसरे, मातृसत्तात्मक व्यवस्था के अपदस्थ होने के बाद से समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विधान रहा है। फलतः स्वाभाविक था कि पुरूष के सन्दर्भ में पुरूष दृष्टि द्वारा स्त्री को देखा जाता। इसलिए पुरूष की श्रेष्ठता, सम्मान, स्थान, शक्ति, अधिकार और स्वार्थ की रक्षा के लिए धर्म शास्त्रों ने अनेक ऐसे आप्रवचनों, सूत्रों, श्लोकों की रचना की जिन्होंने स्त्रियों के जीवन को अनेक सामाजिक - नैतिक अर्गलाओं में बाँध दिया।(1)

क्या हर औरत मर्द होना चाहती है, कभी नहीं? संवेदनहीन वह होना नहीं चाहती और संवेदनशील पुरूष होने में और भी पीड़ा है। **हम औरतों की तरह वह दर्द बाँट नहीं पाता और बिना बाँटे दर्द ना काबिले बर्दाश्त हो जाता है।**- मुदुला गर्ग

''जंग अपने से लड़नी है हमें और जीतना भी अपने को ही है। अपनी सबसे बड़ी बाधा हम स्वयं हैं।''
- रोहिणी अग्रवाल